मुद्रा की मात्रा पर निर्भर करती है। अतः मुद्रा स्फीति तब होती है जब मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है। यहाँ मुद्रा स्फीति को रोकने के लिए मुद्रा की पूर्ति में स्थिरता आनी चाहिए। दूसरी विधि Keynesian theory है, जिसमें माना जाता है कि demand function का निर्धारण अनेकों variables के द्वारा होता है। अतः supply of money and aggregate demand function में कोई प्रत्यक्ष तथा सरल सम्बन्ध नहीं है। जैसा कि Quantity theory of money में माना गया है।

Bent Hansen ने अपनी पुस्तक, A study in the theory of Inflation में Demand Pull inflation का एक अलग Model प्रस्तुत किया है। जहाँ Keynes ने अपने Demand Pull inflation की व्याख्या के लिए वस्तु बाजार में माँग की अधिकता की व्याख्या की वहाँ Hansen ने एक वृहद कदम उठाया तथा अर्थव्यवस्था को वस्तु-बाजार तथा साधन बाजार (factor market) में विभाजित किया। Keynes ने goods Gap के माध्यम से जो पूर्ति की तुलना में माँग अधिक होने से उत्पन्न होता है। Demand Pull inflation का वर्णन किया। लेकिन Hansen ने goods-Gap and factors gap. दोनों के माध्यम से अपने Demand Pull inflation की व्याख्या की है तथा दोनों Gap के अन्तर्सम्बन्धों को दिखलाया है।

COST PUSH INFLATION :→

20 वीं शताब्दी के मध्य तक मुद्रा-स्फीति की व्याख्या Generalised excess demand के माध्यम से किया जाता था जो मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त या केन्स के सिद्धान्त के माध्यम से वर्णित होता था। मुद्रा-स्फीति की पूर्ति या लागत व्याख्या 20 वीं शताब्दी के मध्य में प्रस्तुत की गई। इसे Cost-Push inflation theory कहा जाता है यह विचार की मूल्य

प्रस्तुत रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट है कि जैसे-जैसे A.D.F D_1D_1 से D_2D_2, D_3D_3, D_4D_4 तथा D_5D_5 की ओर जाता है एक दिए हुए Aggregate supply function SS के लाभ क्रमशः तल P_1 से P_2, P_3, P_4 तथा P_5 पर बढ़कर पहुँच जाता है। लेकिन एक अन्तर यह पाया जाता है कि जब Aggregate Demand function (ADF) D_1D_1 से ऊपर बढ़ता है तो D_4D_4 Aggregate output तक उत्पादन तथा मूल्य दोनों बढ़ते हैं परन्तु D_4D_4 के ऊपर पूर्ण रोजगारी दशा सीमा पर पहुँचने के कारण केवल मूल्य तल में ही वृद्धि होती है। Keynes ने D_4D_4 से D_5D_5 के बीच की स्थिति को True inflation (वास्तविक मुद्रा स्फीति) कहा तथा D_1D_1 से D_4D_4 तक की स्थिति को bottleneck inflation या Partial inflation (आंशिक या रुकावट पूर्ण स्फीति) कहा। यहाँ True inflation हो या bottleneck inflation हो, मुद्रा स्फीति का कारण एक दिये हुए aggregate supply function पर माँग में अतिरिक्त वृद्धि है। इस प्रकार Keynes के समर्थक अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि पूर्ण रोजगारी स्तर पर aggregate supply की तुलना में अतिरिक्त aggregate demand के कारण मुद्रा स्फीति का जन्म होता है।

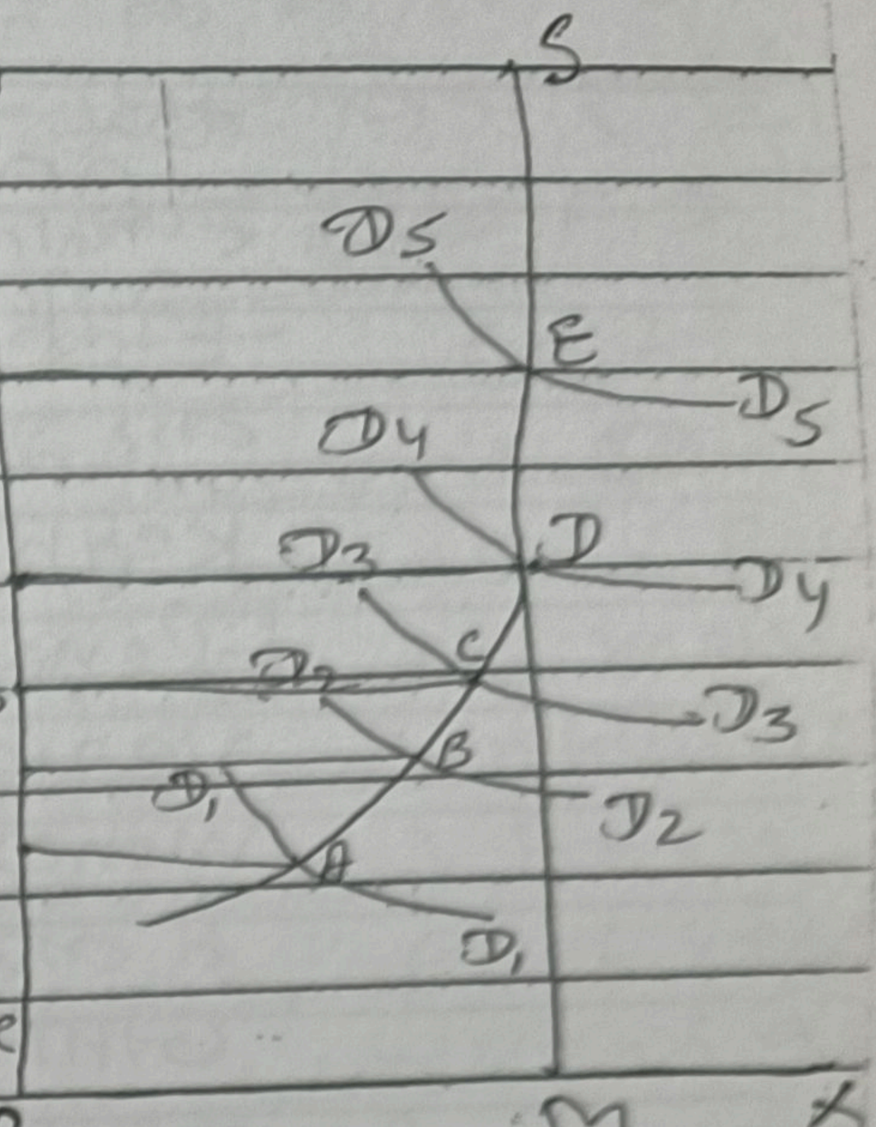

यहाँ प्रश्न उठता है कि क्यों माँग की अधिकता की स्थिति उत्पन्न होती है? इसकी व्याख्या दो रूपों में पायी जाती है। पहली व्याख्या Quantity theory of money के माध्यम से दी जाती है तथा दूसरी Keynesian theory के माध्यम से। पहली विधि अपेक्षाकृत ही सरल है और Demand function के मूल निर्धारक के रूप में मुद्रा की मात्रा को मानती है। मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा स्फीति की व्याख्या में यह माना जाता है कि मूल्य प्रत्यक्ष एवं आनुपातिक रूप में

इसे world Inflation कहा जाता है लेकिन नैसर्गिक से अधिक महत्वपूर्ण कारण कृत्रिम है जैसे सरकार द्वारा मुद्रा की मात्रा में वृद्धि जो व्यय पूरा करने के लिए मुद्रा सृजन के रूप में होता है; मुद्रा के चलन वेग में वृद्धि, बैंको के द्वारा साख-सृजन में वृद्धि, युद्ध की स्थिति एवं जनसंख्या में वृद्धि आदि। क्योंकि मुद्रा सृजन से वस्तुओं की तुलना में बाजार में मुद्रा की मात्रा अधिक हो जाती है साख-सृजन से भी मुद्रा प्रसार होता है एवं जनसंख्या में वृद्धि से मूल्य स्तर बढ़ जाता है जनसंख्या के कारण मुद्रा स्फीति का वर्णन करते हुए Coulborn ने लिखा है कि — " If population increases rapidly, while the aggregate of money remains stable, the consequent rise in the velocity of circulation is likely to out weight the counter vailing increase in the value of money perhead, further a rapid increase is population may increase out put less than proportinately another factor tending to raise prices."

DEMAND PULL INFLATION :-

मुद्रा स्फीति विभिन्न प्रकार की होती है जिसका विभाजन विभिन्न आधारों पर होता है। इनमें Demand Pull Inflation and Cost Push Inflation का विशेष महत्व है जब सामान्यत: वस्तुओं की पूर्ति की तुलना में माँग में बहुत अधिक वृद्धि हो जाती है तो इसे Demand Pull Inflation कहते हैं। अर्थात " Too much money chasing too few goods." ऐसी स्थिति में Aggregate demand function दाहिनी ओर ऊपर चला जाता है जबकि Aggregate supply function दाहिने नीचे की ओर परिवर्तन नहीं होता है परिणामस्वरूप नई संतुलन बिन्दु ऊँचे मूल्य तल पर प्राप्त किया जा सकता है।

INFLATION (मुद्रा-स्फीति)

Demand-Pull and Cost-Push inflation Effects and its Control:-

मुद्रा का मूल्य सदैव एक समान नहीं रहता और उसकी क्रय-शक्ति में सदैव परिवर्तन होते रहते हैं। जब मुद्रा का प्रसार तेजी से होने लगता है, जिसे मुद्रा-स्फीति की अवस्था कहते हैं। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा स्फीति की परिभाषा विभिन्न शब्दों में दिया है. परन्तु सब का सार तत्त्व यही है कि जब मुद्रा की मात्रा अधिक हो एवं वस्तुओं की मात्रा कम तो मुद्रा की क्रय-शक्ति घटती है और वस्तुओं का मूल्य बढ़ता है। इस अवस्था को मुद्रा स्फीति की अवस्था कहते हैं। Chamber's Twentieth Century Dictionary के अनुसार —

"Under increase in quantity of money in proportion to buying power as on an excessive issue of fiduciary money" = अर्थव्यवस्था में Inflation उत्पन्न करती है। Kemmerer के अनुसार — "Inflation is too much money and deposit currency that is too much currency in relation to the physical volume of business being done." Crowther ने लिखा है कि — "Inflation is a state in which the value of money is falling. i.e Price are rising." इसके अतिरिक्त Gregory, Crowther, Paul. Erning, A.C. Pigou, G. Ackelyy. आदि विद्वानों ने भी मुद्रा स्फीति को परिभाषित किया लेकिन सबकी परिभाषाओं का सार यह है कि मुद्रा स्फीति वह स्थिति है, जिसमें मुद्रा का मूल्य गिरता रहता है और वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य बढ़ता रहता है।

मुद्रा स्फीति क्यों होती है? यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। यों तो कभी-कभी Inflation नैसर्गिक रूप में हो जाती है। जैसे अगर देश में अधिक सोना मिल जाये या बाहर से आने लगे तो मुद्रा स्फीति उत्पन्न हो जाती है।